अघोर 'क्रीं' तंत्र दीक्षा

अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

शिव अघोर अर्थात् शांत और सरल भी हैं और घोर अर्थात् भयंकर भी हैं। वास्तव में शिव घोर से भी अति घोर और रौद्र स्वरूप वाले हैं, जो सबके स्वामी और सब कुछ संहार करने में समर्थ है।



अघोर तंत्र शिव की चेतना, स्पन्दन, अनुभूति और चैतन्यता को प्राप्त करने का सहज और सरल मार्ग है। स्पन्दन अर्थात् चेतना का जीवंत स्पर्श और दिव्य ऊर्जा का अनुभव।

'क्रीं' बीज शक्ति तांत्रिक सिद्धियों के साथ ही साधक के अज्ञान का नाश करती है, भय-आसक्ति का शमन करती है, अहंकार का विघटन करती है, आत्मिक शक्ति का जागरण कर उसे दिशा प्रदान करती है। 'क्रीं' बीज शक्ति साधक के पुराने संस्कारों को समाप्त कर नई चेतना का विकास करती है।

पुरानी, जड़ हो चुकी मान्यताओं को समाप्त करना ही जीवन का सबसे बड़ा भय है और अघोर पंथ का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है - सभी प्रकार के भय का नाश चाहे वह मृत्यु का हो, हानि का हो, असफलता का हो, अपमान का हो।

'क्रीं' तंत्र शक्ति सभी प्रकार के भयों का नाश कर शिव-शक्ति के चैतन्य मार्ग को अवरोध रहित कर देती है। 'क्रीं' बीज शक्ति कुण्डलिनी जागरण की प्रमुख बीज शक्ति है।

अघोर क्रीं तंत्र दीक्षा

- साधक के भीतर छिपे भय को समाप्त करती है।
- मन की कुण्ठाओं और उलझनों को समाप्त करती है।
- स्वयं के वास्तविक स्वरूप से परिचय कराती है।
- मन में छिपे द्वेष, वैमनस्य का समापन करती है।
- अतीत के आघातों से बाहर निकलने की शक्ति प्रदान करती है।

'क्रीं' बीज मंत्र का गुंजरण तांत्रिक दर्शन में आंतरिक रुपांतरण का प्रतीक है। इसका लक्ष्य बाहरी चमत्कार नहीं, बल्कि भीतर के अज्ञान, भय, आसक्ति और अहंकार का शमन कर साधक को शक्ति और शिव-चेतना की ओर ले जाना है। इसी कारण इसे महाकाली का प्रमुख बीज माना गया है। अघोर अर्थात् सहज, सरल स्वरूप शिव, 'क्रीं' अर्थात् काली शक्ति के साथ संयुक्त होकर साधक को नवीनता से ओत-प्रोत कर देते है।

कुलार्णव तंत्र में शक्ति-बीजों की महिमा का विस्तार से वर्णन करते हुए कहा गया है कि सद्गुरुदेव से दीक्षा ग्रहण कर ही तंत्र क्रियाओं में सिद्धि प्राप्त की जा सकती है, बीज मंत्रों को अत्यंत प्रभावशाली माना गया है, नियमित 'क्रीं' मंत्र जप से शक्ति चेतना का विस्तार होता है।

अघोर 'क्रीं' तंत्र दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-